Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=211
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY 2023, VOL-11/57
https://doi.org/10.5281/zenodo.8154001

साहित्य में देश–प्रेम : कविता के संदर्भ में

डॉ0 लक्ष्मी नौटियाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, राठ महाविद्यालय, पैठाणी ई-मेल – nautiyalkamal14@gmail.com

Paper Received On 20 May 2023
Peer Reviewed On 28 May 2023
Published On: 1 June 2023

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

देश–प्रेम अथवा राष्ट्र–प्रेम का भाव उस देश में निवास करने वाले मानव की बहुमूल्य थाती है। सत्य तो यह है कि अपने देश के प्रति अनुराग से उत्पन्न आनंद मानव के मनोरागों को परिष्कृत करके उसे महानतम बनाता है। यही कारण है कि भारत ही नहीं विश्व के साहित्य में देश–प्रेम का भाव किसी न किसी रूप में उपस्थित रहा है।

साहित्य में देश–प्रेम का भाव नामक विषय के अंतर्गत हिंदी साहित्य में कविता के माध्यम से उजागर होने वाला राष्ट्र–प्रेम का भाव भारतवर्ष के साहित्य की गौरवपूर्ण धरोहर रहा है। प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में हमें राष्ट्र–प्रेम के अद्वितीय उदाहरण मिलते हैं। हमारे देश पर समय–समय पर होने वाले आक्रमणों ने इस प्रेम की धारा को अत्यंत गहराई से देखा, परखा और महसूस किया, यही कारण है कि समय–समय पर हमारे जननायक, ऋषि–मुनि, समाज–सुधारक, धर्माचार्य तथा साहित्य के कवियों द्वारा देश–प्रेम की हिलोर को अत्यंत उत्साह के साथ गाया गया है।

हमारे हिंदी के कवियों में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के काव्य साहित्य में देश–प्रेम की हलचल और अनुगूंज विपुल स्वरों में सुनाई देती है। हमें बाल्मीकि **'रामायण'** का वह प्रसंग भी याद आता है जिसमें लक्ष्मण लंका के सौंदर्य और संपत्ति पर मुग्ध होकर कुछ दिन वहीं रुकने का आग्रह करते हैं, तो श्रीराम राष्ट्र–प्रेम की दुहाई देते हुए कहते हैं – **''यद्यपि यह स्वर्ण पुरी लंका है फिर भी मेरे मन को अच्छी नहीं लगती, क्योंकि जन्म देने वाली माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।''**
''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।''[1]
हिंदी के आदिकालीन साहित्य के कवियों में भी देश–प्रेम के ज्वलंत उदाहरण मिलते हैं और हमारे सामने प्रमाण है कि हिंदी के रासो काव्य इसी संदर्भ में लिखे गए हैं। मध्यकालीन साहित्य में तुलसी के राम में राष्ट्र–प्रेम का जयघोष मिलता है। कदाचित आज भी किसी समुन्नत राष्ट्र की परिकल्पना रामराज्य के बिना पूर्ण नहीं होती। उत्तरकांड में कहा गया है –

''रामराज बैठे त्रैलोका,
हर्षित भए गए सब सोका।''[2]
हिंदी के आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र में देश–प्रेम की उत्कट अभिलाषा देखने को मिलती है। इसके पश्चात महावीर प्रसाद द्विवेदी युग में देश–प्रेम की लहर मिथकों के माध्यम से अथवा स्वतंत्र रूप से देखने

को मिलती है। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त उत्कट राष्ट्र–प्रेमी रहे हैं। भारत–भारती में गुप्त जी ने लिखा –

"भू–लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है,
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।"[3]

इन सभी कवियों का युग भारत की पराधीनता का युग था, इसीलिए देश–प्रेम के स्वर तीव्रता से उभरे, छायावाद के कवि प्रसाद ने –

"अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा"[4]

कहकर इस भारत देश के महत्व एवं मूल्यों से भी हमारा परिचय कराया है। उन्होंने

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्वला
स्वतंत्रता पुकारती"[5]

कहकर इस देश के मान एवं सम्मान को काव्यात्मक बुलंदियों तक पहुँचाया।

हिंदी की प्रगतिशील कविता तो राष्ट्र और समाज के सरोकारों से ही जुड़ी हुई है, जिसमें दिनकर का ओजस्वी स्वर अनेक भ्रांतियों को तोड़ता हुआ देश–प्रेम के चरम तक पहुँचा है। दिनकर ने अनेक मिथक काव्य लिखे, जिसमें रश्मिरथी, रेणुका, सामधेनी, कुरुक्षेत्र, परशुराम की प्रतीक्षा के जरिए उन्होंने राष्ट्र–प्रेम की अलख जगाई है, उनकी 'मेरे नगपति मेरे विशाल' नामक कविता भारत देश की संस्कृति, सामाजिक, और राष्ट्रीय मूल्यों को उजागर करती हुई दिखाई देती है। कवि को अपनी भारतीय संस्कृति पर अभिमान है किंतु कालांतर में उसके क्षरण की चिंता भी है, इसीलिए उसने हिमालय से प्रश्न किया है–

"तू पूछ अवध से राम कहाँ
वृंदा बोलो घनश्याम कहाँ
ओ मगध कहाँ, मेरे अशोक
वह चंद्रगुप्त बलधाम कहाँ।"[6]

कवि पुनः कहते हैं –

"कितनी मणियां जुट गई लुटा
कितना मेरा वैभव अशेष
तू ध्यानमग्न ही रहा इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।"[7]

इसी तरह से हिंदी की प्रयोगवादी कविता में यद्यपि व्यक्तिगत अनुभूतियों का ही चित्रण है किंतु कुछ कालजयी रचनाएं ऐसी हैं जिनमें देश–प्रेम की सजीव अभिव्यक्ति हुई है जैसे – धर्मवीर भारती का अंधायुग, रामनरेश मेहता की संशय की एक रात, भवानी प्रसाद मिश्र का कालजयी नामक खंडकाव्य आदि। भवानी प्रसाद मिश्र कालजयी खंडकाव्य में देश–प्रेम एवं राष्ट्र के मूल्यों के संदर्भ में लिखते हैं – सम्राट अशोक ने अपने देश का संरक्षण मूल्यों के आधार पर किया, इसीलिए वह इतिहास के महान अशोक कहलाए।

''इस महापुरुष ने
धर्म और सेना का साथ नहीं माना
इसने हित को फैलाने में
हिंसा का हाथ नहीं माना।''[8]

इसीलिए जब अशोक गद्दी पर बैठा तो उसने एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की।''

हिंदी की साठोत्तरी कविता में गजल, गीतकार दुष्यंत कुमार का नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता है, जिनके भीतर सामाजिक, विसंगतियों का आक्रोश एवं देश को सही राह पर ले जाने की शुद्ध मंशा थी।

''आज यह दीवार पर्दों की तरह हिलने लगी
शर्त लेकिन थी कि यह बुनियाद हिलनी चाहिये
मेरे सीने में नही तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिये
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिये।''[9]

(साये में धूप)

राष्ट्रकवि मैथिलीशणगुप्त को अपनी संस्कृति आचार–व्यवहार से अद्भुत अनुराग था। उनका उत्कट देश–प्रेम भारत–भारती में देखा जा सकता है –

''मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती
भगवान! भारतवर्ष में गूंजे हमारी भारती।
हो भद्रभावोद्भाविनी वह आरती हे भगवते!
सीतापते! सीतापते! गीतापते! गीतापते।''[10]

भारतीयों में उत्कट देश–प्रेम का भाव स्वतंत्रता के लिए हुई क्रांतियों से मिलता है। स्वतंत्रता संग्राम का पहला आगाज 1857 का युद्ध था जिसमें स्वयं भारतीय वीरांगना हाथ में तलवार लेकर अंग्रेजों के सम्मुख खड़ी थी। यहीं से भारतीय जनता में स्वतंत्रता के प्रति जागृति की भावना का उद्घोष हुआ। सुभद्रा कुमारी चौहान ने 1857 की इस वीरांगना नारी लक्ष्मीबाई के शौर्य को नमन करते हुए लिखा –

''महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी।
यह स्वतंत्रता की चिंगारी, अंतरतम से आई थी।।''[11]

और पुनश्च रानी के यशोगान में कवियित्री कहती हैं –

''रानी गयी सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी।
अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी, बन स्वतंत्रता नारी थी।
दिखा गई पथ सिखा गयी, हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।''[12]

हिंदी साहित्य में झाँसी की रानी कविता एक मील का पत्थर है जो राष्ट्रप्रेमियों में क्रांति की ज्वाला जगा देती है। इसी तरह साहित्य में कविताओं के माध्यम से स्व0 माखनलाल चतुर्वेदी जी ने देश–प्रेम की अलख जगाई है –

''चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊं
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊं
मुझे तोड़ लेना वन माली उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जायें वीर अनेक।''[13]

गुप्त जी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के प्रचण्ड उद्घोषक थे और उनका मानना था कि भारत वह गुरु है जिसने विश्व को शांति और सौहार्द का पाठ पढ़ाया है।

''यूनान ही कह दे कि वह ज्ञानी–गुणी कब था हुआ?
कहना न होगा, हिन्दुओं का शिष्य वह जब था हुआ।
हमसे अलौकिक ज्ञान का आलोक यदि पाता नहीं,
तो वह अरब यूरोप का शिक्षक कहा जाता नही।''[14]

कवि निराला राम की शक्ति के बहाने जिस राम की वेदना को प्रकट करते हैं, वह स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाली विभूतियाँ ही तो हैं। सीता माता यहाँ हमारी खोयी हुई स्वतंत्रता का प्रतीक हैं और राम की सेना के सभी नायक वानरदल उन आंदोलनकारियों के प्रतीक है जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के महान यज्ञ में अपने प्राणों का विसर्जन किया। जब राम कहते हैं –

''जानकी हाय उद्धार प्रिया का न हो सका''[15]

तो इसका अभिप्राय यही था कि हमारे महान राष्ट्रवादी नायक अपनी जन्मभूमि को मुक्त कराने में असह्य पीड़ा झेल रहे थे। यह उनका ही दुःख दर्द था, यह गांधी का दर्द था और यह निराला की वेदना थी।

अस्तु कहा जा सकता है कि भारत का राष्ट्रीय चेतना संदर्भित उत्कृष्ट साहित्य कविता के माध्यम से उस समय लिखा गया, जिस समय हम अपनी भारत माता की मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे थे। गुप्त हों या सोहनलाल द्विवेदी, दिनकर हों या जयशंकर प्रसाद, निराला हों या पंत, बालकृष्ण शर्मा हों या माखनलाल चतुर्वेदी या श्यामनारायण पाण्डे सभी में देशभक्ति का अनुराग हिलोंरे लेता हुआ दिखाई देता है। इस तरह भारत का राष्ट्र–प्रेम संदर्भित यह साहित्य और यह काव्य अनुपमेय है, जो आने वाली पीढ़ी का पथ–प्रदर्शक है और रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

रामायण, महर्षि वाल्मीकि, युद्धकाण्ड 6.124.17
रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, उत्तरकाण्ड
भारत–भारती, मैथिलीशरण गुप्त, लोकभारती पेपरबैक, पृ0सं0 11
चंद्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, विश्वबुक प्रकाशन, पृ0सं0 63
चंद्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, विश्वबुक प्रकाशन, पृ0सं0 125
हुंकार, रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, पृ0सं0 72
हुंकार, रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, पृ0सं0 71
कालजयी, भवानी प्रसाद मिश्र, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ, पृ0सं0
Kavitakosh, org समय–02:05
भारत–भारती, मैथिलीशरण गुप्त, लोकभारती पेपरबैक, पृ0सं0 09
मुकुल, सुभद्रा कुमारी चौहान, ओंकार प्रेस, इलाहाबाद पृ0सं0 53
मुकुल, सुभद्रा कुमारी चौहान, ओंकार प्रेस, इलाहाबाद पृ0सं0 57
Kavitakosh, org समय–03:17
भारत–भारती, मैथिलीशरण गुप्त, लोकभारती पेपरबैक, पृ0सं0 09
Kavitakosh, org समय–03:22

Cite Your Article As:
Lakshmi Nautiyal. (2023). SAHITYA MAIN DESH - PREM : KAVITA KE SANDARBH MAIN. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,, 11(57), 275–279. https://doi.org/10.5281/zenodo.8154001

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language